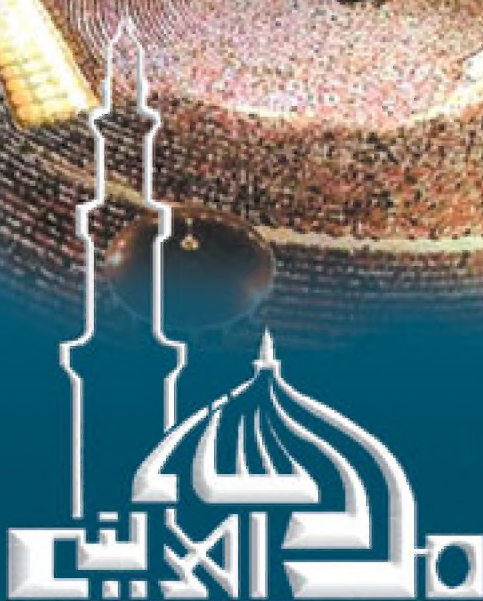


कुरआने पाक सहीह मखारिज के साथ पढ़ने के लिये इब्तिदाई काइदा



Madani Qaaida (Hindi)

# म-दनी काइदा



पेशकश: मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'क्ते इस्लामी)



مكتبة المدينة  
(مكة الإسلامية)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقُلُوبَ وَالسَّلَامَ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ  
وَعَلَى الْإِثْمِ وَأَصْحَابِكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ

कुरआने पाक सहीह मख़ारिज के साथ पढ़ने के लिये इब्तिदाई क़ाइदा

# म-दनी क़ाइदा

पेशकश : मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी



सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net



## ( म-दनी काइदा )

येह किताब ( म-दनी काइदा )

मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुतलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

## मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

## क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(तारिख़ دمشق لابن عساکر ج ۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

## किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
اِنَّا نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## हुरूफ़ के मख़ारिज

❖ मख़ज के लु-ग़वी मा'ना हैं निकलने की जगह इस्तिलाहे तज्वीद में जिस जगह से हर्फ़ अदा होता है उसे मख़ज कहते हैं।

हुरूफ़	नाम	मख़ारिज
ه.ع	हुरूफ़े ह-लक़िय्यह	हल्क़ के नीचे वाले हिस्से से अदा होते हैं।
ح.ع	" "	हल्क़ के दरमियान वाले हिस्से से अदा होते हैं।
خ.ع	" "	हल्क़ के ऊपर वाले हिस्से से अदा होते हैं।
ق	हुरूफ़े ल-हविय्यह	जबान की जड़ और तालू के नर्म हिस्से से अदा होता है।
ك	" "	जबान की जड़ और तालू के सख़्त हिस्से से अदा होता है।
ج.ش.ي	हुरूफ़े श-जरिय्यह	जबान के दरमियान और तालू के दरमियान से अदा होते हैं।
ض	हर्फ़े हाफ़ियह	जबान की करवट और ऊपर की दाढ़ों की जड़ से अदा होता है।
ل.ن.ر	हुरूफ़े त-रफ़िय्यह	जबान का कनारा और दांतों की जड़ के तालू की जानिब वाले हिस्से से अदा होते हैं।
ت.د.ط	हुरूफ़े नित़िय्यह	जबान की नोक और ऊपर के दांतों की जड़ से अदा होते हैं।
ث.ذ.ظ	हुरूफ़े लि-सविय्यह	जबान का सिरा और ऊपर के दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं।
ز.س.ص	हुरूफ़े स-फ़ीरियह	जबान की नोक और दोनों दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं।
ف	हुरूफ़े श-फ़विय्यह	ऊपर के दांतों के कनारे और निचले होंठ के तर हिस्से से अदा होता है।
ب	" "	दोनों होंठों के तर हिस्से से अदा होता है।
م	" "	दोनों होंठों के खुश्क हिस्से से अदा होता है।
و	" "	दोनों होंठों की गोलाई से अदा होता है।
ख़ैशूम ( नाक का बांसा )		येह गुन्ना का मख़ज है।



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## किताब पढ़ने की दुआ

शेखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि र-ज़वी دامت برکاتهم العالیہ

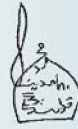
दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से क़ब्ल ज़ैल में दी हुई दुआ  
पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا  
رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

(रूहानी हिकायात, स. 68)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये । **وَالسَّلَامُ عَلَى الْأَكْرَامِ**

तालिबे गुमे  
मदीना  
व बक़ीअ  
व मग़िफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

**म-दनी मक्सद :** मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ**

नाम \_\_\_\_\_

मद्रसा \_\_\_\_\_

द-रजा नम्बर \_\_\_\_\_

पता \_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_ फ़ोन नम्बर \_\_\_\_\_

## पहले इसे पढ़िये

येही है आरजू ता'लीमे कुरआं आम हो जाए  
तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

कुरआने मजीद, फुरकाने हमीद अल्लाह तआला का ऐसा कलाम है जो कि रुशदो हिदायत और इल्मो हिक्मत का अनमोल खज़ाना है। नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : **خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ** या'नी तुम में बेहतरीन शख्स वोह है, जिस ने कुरआन को सीखा और दूसरों को सिखाया।

(صحيح البخارى، كتاب فضائل القرآن، باب خيركم.....الخ، الحديث ٥٠٢٧، ص ٤٣٥)

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के तहत ता'लीमे कुरआने पाक को आम करने के लिये अन्दरून व बैरून मुल्क हिफ़ज़ व नाज़िरा के ला ता'दाद मदारिस बनाम **"मद्र-सतुल मदीना"** काइम हैं। पाकिस्तान में ता दमे तहरीर कमो बेश **72,000** (बहत्तर हज़ार) म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों को हिफ़ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। इसी तरह मुख़लिफ़ मसाजिद वगैरा में उमूमन रोज़ाना बा'द नमाज़े इशा हज़ारहा **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) की तरकीब होती है जिन में इस्लामी भाई सहीह़ मुख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम सीखते, दुआएं याद करते हैं नीज़ नमाज़ों और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त हासिल करते हैं। इलावा अज़ीं ब शुमूल पाकिस्तान दुन्या के मुख़लिफ़ मुमालिक में घरों के अन्दर तक्रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम **मद्र-सलतुल मदीना** (बराए बालिग़ात) भी काइम किये जाते हैं। एक अन्दाजे के मुताबिक़ ता दमे तहरीर फ़क़त **बाबुल मदीना** (कराची) में इस्लामी बहनों के **1317** (एक हज़ार तीन सो सत्तरह) मद्रसे तक्रीबन रोज़ाना काइम होते हैं जिन में **12017** (बारह हज़ार सत्तरह) इस्लामी बहनें कुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआएं याद करती हैं।



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! मद्र-सतुल मदीना के तजरिबा कार असातिजए किराम ने कुरआने पाक को आसान अन्दाज़ में सीखने के लिये **म-दनी काइदा** मुरत्तब किया है । “म-दनी काइदा” में छोटी और बड़ी उम्र के त-लबा व तालिबात के लिये तज्वीद के बुन्यादी क़वाइद हत्तल इम्कान आसान अन्दाज़ में पेश किये गए हैं ताकि म-दनी मुन्ने, म-दनी मुन्नियां और इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें आसानी से दुरुस्त कुरआने पाक पढ़ना सीख जाएं । जय्यिद कुरा हज़रात (كَفَرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने इल्मे तज्वीद के हवाले से बहुत एह्तियात् के साथ **म-दनी काइदा** पर नज़रे सानी फ़रमाई है ।

म-दनी काइदा के तरीक़ए तदरीस के लिये **रहनुमाए मुदर्रिसीन** भी मुरत्तब की गई है, जिस में अस्बाक पढ़ने का तरीक़ए कार तफ़सील के साथ बताया गया है । **अन्करीब म-दनी काइदा की V.C.D** दा 'वते इस्लामी के इदारे मक-त-बतुल मदीना से जारी की जाएगी, जिस से येह **म-दनी काइदा** समझ कर कुरआने पाक पढ़ने में मज्जीद आसानी होगी ।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा 'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-जवी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अता कर्दा इस म-दनी मक्सद “मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**” के तहत अपनी इस्लाह के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल करने और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये आशिकाने रसूल के साथ **म-दनी काफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा 'वते इस्लामी को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा 'वते इस्लामी)

29 जुल हिज्जतिल हराम 1428 हि.



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 إِنَّا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### सबक नम्बर (1) : हुरूफ़े मुफ़िदात

- हुरूफ़े मुफ़िदात या 'नी हुरूफ़े तहज्जी 29 हैं।
- हुरूफ़े मुफ़िदात को तज्वीद व क़िराअत के मुताबिक़ अ-रबी लहजे में अदा करें उर्दू तलफ़ूज़ से परहेज़ करें या 'नी طوئے، طوئے، نه، نه، نه، نه، نه، نه वग़ैरा हरगिज़ न पढ़ें बल्कि طاء، طاء، خاء، خاء، ثاء، ثاء، حاء، حاء، حاء، حاء पढ़ें।
- इन 29 हुरूफ़ में सात "7" हुरूफ़ ऐसे हैं जो हर हालत में पुर या 'नी मोटे पढ़े जाते हैं इन्हें हुरूफ़े मुस्ता लिया कहते हैं और वोह येह हैं ق، ع، ط، ص، ض، ح इन का मज्मूआ ضَمْطُ قَطْ है।
- होंटों से सिर्फ़ चार हुरूफ़ अदा होते हैं। ب، ف، م، و। इन के इलावा बाक़ी हुरूफ़ पर होंट न हिलने दें।

ا (أَلِف)	ب (بَاء)	ت (تَاء)	ث (ثَاء)	ج (جِيم)
ح (حَاء)	خ (خَاء)	د (دَال)	ذ (ذَال)	ر (رَاء)
ز (زَاء)	س (سَيْن)	ش (شَيْن)	ص (صَاد)	ض (ضَاد)
ط (طَاء)	ظ (ظَاء)	ع (عَيْن)	غ (غَيْن)	ف (فَاء)
ق (قَاء)	ك (كَاف)	ل (لَام)	م (مِيم)	ن (نُون)
و (وَاء)	ه (هَاء)	ع (هَمْزَة)	ی (يَاء)	



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 إِنَّا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

### सबक नम्बर (2) : हुरूफ़े मुरक्कबात

- ❖ दो "2" या इस से जाइद हुरूफ़ मिल कर एक मुरक्कब बनता है।
- ❖ मुरक्कब हुरूफ़ को मुफ़िद हुरूफ़ की तरह अलग अलग पढ़ें।
- ❖ इस सबक में भी तलफ़ुज़ की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखते हुए मा 'रूफ़ या 'नी अ-रबी लहजे में पढ़ें।
- ❖ जब दो या इस से जाइद हुरूफ़ मिला कर लिखे जाते हैं तो उन की शक़ल कुछ बदल जाती है अक्सर हुरूफ़ का सर लिखा जाता है और धड़ छोड़ दिया जाता है।
- ❖ जो हुरूफ़ मुरक्कब होने की हालत में एक जैसे लिखे जाते हैं उन की नुक्तों के रद्दो बदल से पहचान करें।

ا	لا	لا	با	فا	تا
يا	ثا	شا	سا	فا	قا
جا	خا	حا	عا	غا	صا
ضا	طا	ظا	ما	ها	का
لب	كب	کت	کث	کف	طب
سل	شل	صل	ضل	فل	قل
عل	غل	کل	کن	طن	ظن



جد	خد	حد	عد	غد	خذ
خز	حر	بر	ير	طر	ظر
بم	نم	تم	يم	شم	شم
لج	عج	حج	بج	بع	يغ
نص	فص	قض	بس	يس	تس
فق	قق	شق	سق	عق	حق
لك	فك	تك	كو	هو	مو
بي	ني	تي	يى	ؤ	ئى
بة	نة	تة	ية	عط	فظ
يلب	بهم	بعد	عبد	حمد	هلك
يهب	خطف	ثمن	حسن	فئة	سخط



خلق	فلق	علق	نصر	قتل	يلج
تجد	طبع	بلغ	نفس	جنت	سئل
قسط	صفت	شمس	خشى	غير	غبر
مطر	عشر	عسر	ظلل	شكر	بسم

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا نَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### शबक नम्बर (3) : ह-रकात

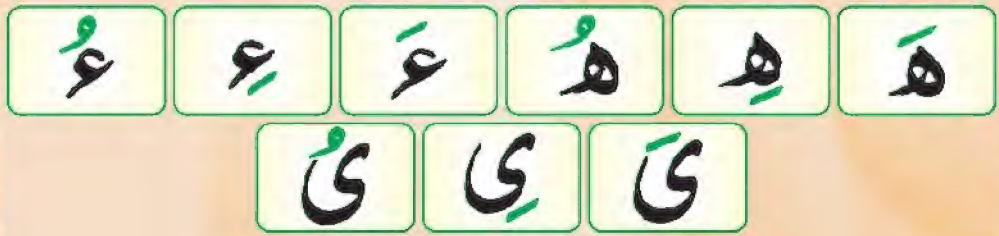
- ह-र-कत की जम्अ ह-रकात है। ज़बर , जेर  और पेश  को ह-रकात कहते हैं। ज़बर और पेश हर्फ के ऊपर जब कि जेर हर्फ के नीचे होता है।
- जिस हर्फ पर कोई ह-र-कत हो उसे मु-तहर्रिक कहते हैं।
- ज़बर  मुंह और आवाज़ को खोल कर, जेर  आवाज़ को नीचे गिरा कर और पेश  होंटों को गोल कर के अदा करें।
- ह-रकात को बिगैर खींचे बिगैर झटका दिये मा 'रूफ़ पढ़ें।
- " " पर कोई ह-र-कत या जज़्म आ जाए तो उसे हमज़ह " " पढ़ें।
- " " पर ज़बर या पेश हो तो  को पुर और " " के नीचे जेर हो तो " " को बारीक पढ़ें।

ا	اِ	اُ	ب	بِ	بُ
ت	تِ	تُ	ث	ثِ	ثُ









الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 إِنَّا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### सबक नम्बर (4)

- » इस सबक को रवां पढ़ें ।
- » ह-रकात की दुरुस्त अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें ।
- » हुरूफ़े क़रीबुस्सौत या 'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें ।



ه	ه	ه	ه	ه	ه
ع	ع	ع	ع	ع	ع
خ	خ	خ	خ	خ	خ
ب	ب	ب	ب	ب	ب
و	و	و	و	و	و
ل	ل	ل	ل	ل	ل
ر	ر	ر	ر	ر	ر
ش	ش	ش	ش	ش	ش

## يَا خَيْرُ

﴿ सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनने के लिये चलते फिरते पढ़ते रहें ।

( मसाइलुल कुरआन, स. 290 )

## इल्म के पांच द-रजात

- ﴿ (1) ख़ामोशी (2) तवज्जोह से सुनना (3) जो सुना उसे याद रखना  
(4) जो सीखा उस पर अमल करना (5) जो इल्म हासिल हो उसे दूसरों तक पहुंचाना ।



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 إِنَّا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### सबक नम्बर (5) : तन्वीन

- » दो ज़बर ـ, दो जेर ـ और दो पेश ـ को तन्वीन कहते हैं। जिस हर्फ पर तन्वीन हो उसे मुनव्वन कहते हैं।
- » तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आखिर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की तरह होती है। जैसे : اُنْ = اُنْ , اِنْ = اِنْ , اِى = اِى
- » तन्वीन के हिज्जे इस तरह करें : مَ : مِ , مِ : مِ , مِ : مِ , مِ : مِ , مِ : مِ
- » ज़बर की तन्वीन के बा'द कहीं "ا" और कहीं "ي" लिखा जाता है हिज्जे करते वक़्त उस का नाम न लें।

ط	ط	طا	ة	ت	تا
ذ	ذ	ذا	ز	ز	زا
ث	ث	ثا	ظ	ظ	ظا
ص	ص	صا	س	س	سا
ض	ض	ضا	د	د	دا





الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 آمَنَّا بِعَدْوِ الْوَعْدِ بِإِلَهِ مِنَ الْمُشْطَرِّينَ الرَّحِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### सबक नम्बर (6)

- इस सबक को हिज्जे और रवां दोनों तरीकों से पढ़ें ।
- ह-रकात, तन्वीन और तमाम हुरूफ बिल ख़ुसूस हुरूफे मुस्ता लिया की दुरुस्त अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें ।
- हिज्जे इस तरह करें : مَلِكٌ = मक़ी दो पेश क़ाफ़, مَل = ल ज़ेर लाम , م ज़बर मीम : مَلِكٌ : हिज्जे

نَزَلَ	خَلَقَ	صَدَقَ	يَدَاكَ	بَلَغَ	طَبَعَ
جَعَلَ	فَعَلَ	نَظَرَ	ذَكَرَ	كَسَبَ	إِبِلَ
رَسَلَ	صَحَفَ	ثَلَاثُ	سُدُسُ	حُرْمُ	رُبْعُ
حَدَا	خَطَفَ	مَلِكِ	تَزِدُ	تَجِدُ	يَلِجُ
قَتَلَ	سِيلَ	قَرِئَ	قَمَرِ	كَبِرَ	حَشَرَ
أَحَدًا	مَرَضًا	عَبَلًا	هُدًى	طَوًى	قَرًى
مَسَدٍ	ثَنِينَ	سَخَطٍ	ظَلِيلٍ	فِئَةٍ	عُنُقٍ
نَفَرٍ	صَهْدٍ	غَضَبٍ	لَعِبٍ	أَذُنٍ	كُتُبٍ







صَا	صُو	صِي	صَا	ضُو	ضِي
طَا	طُو	طِي	ظَا	ظُو	ظِي
عَا	عُو	عِي	غَا	غُو	غِي
فَا	فُو	فِي	قَا	قُو	قِي
كََا	كَُو	كَِي	لَا	لُو	لِي
مَا	مُو	مِي	نَا	نُو	نِي
وَا	وُو	وِي	هَا	هُو	هِي
اُ	اُو	اِي	يَا	يُو	يِي

## يَا عَلِيمُ

❖ 21 बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के 40 रोज़ तक नहार मुंह पियें (या पिलाएं) **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** غُزُو جَلَّ (पीने वाले का) हाफ़िज़ा रोशन हो जाएगा । (श-ज-रए अलिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या अत्तारिय्या, स. 46)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

### सबक नम्बर (8) : खड़ी ह-रकात

- ❖ खड़े ज़बर् ۱, खड़े ज़ेर ۲ और उल्टे पेश ۳ को खड़ी ह-रकात कहते हैं।
- ❖ खड़ी ह-रकात हुरूफे महा के काइम मक़ाम हैं इस लिये खड़ी ह-रकात को भी हुरूफे महा की तरह एक अलिफ या नी दो ह-रकात के बराबर खींच कर पढ़ें।
- ❖ इस सबक में भी हुरूफे क़रीबुस्सौत या नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ में वाजेह फ़र्क करें।

ث	ت	ث	ط	ط	ظ
ز	ز	ز	ذ	ذ	ذ
ظ	ظ	ظ	ث	ث	ث
س	س	س	ض	ض	ض
د	د	د	ض	ض	ض
ك	ك	ك	ق	ق	ق
ه	ه	ه	ح	ح	ح





بُو	بَي	تُو	تَي	ثُو	ثَي
جُو	جَي	حُو	حَي	خُو	خَي
دُو	دَي	ذُو	ذَي	رُو	رَي
زُو	زَي	سُو	سَي	شُو	شَي
صُو	صَي	ضُو	ضَي	طُو	طَي
ظُو	ظَي	عُو	عَي	غُو	غَي
فُو	فَي	قُو	قَي	كُو	كَي
لُو	لَي	مُو	مَي	نُو	نَي
وُو	وَي	هُو	هَي	أُو	أَي
		يُو	يَي		



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 إِنَّا نَعُدُّ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## सबक नम्बर (10)

- इस सबक को हिज्जे और रवां दोनों तरीकों से पढ़ें।
- इस सबक में पिछले तमाम अस्बाक या 'नी ह-रकात, तन्वीन, हुरूफे मद्दा, खड़ी ह-रकात और हुरूफे लीन शामिल हैं।
- इन तमाम क्वाइद की अदाएगी और पहचान की पुख्तगी के साथ साथ सिद्दहते लफ्ज़ी का ख़ास ख़याल रखें बिल खुसूस हुरूफे मुस्ता लिया।
- हिज्जे करते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि हर हर्फ़ को पिछले हुरूफ़ से मिलाते जाएं। जैसे **مَوْضُوعٌ** के हिज्जे इस तरह करें:
- **مَوْضُوعٌ** = **مَوْ** पेश **ع** ज़बर **ع** = **مَوْ**, **مَوْ** पेश **و** = **مَوْ**, **مَوْ** पेश **و** = **مَوْ**, **مَوْ** पेश **و** = **مَوْ**

قَالَ	صِرَاطَ	هَذَا	ذَلِكَ	كَانُوا	قَالُوا
لَهُ	سَوْفَ	قَوْلٍ	فِيهِ	نُوحِيهِ	بِهِ
لَيْسَ	بَيْنَ	عَذَابًا	مَتَاعًا	طَغَى	شَكُورًا
غَفُورًا	دَاوُدَ	خَوْفٍ	يَوْمٍ	قِيلَ	حِيلَ
رُسُلِهِ	رَسُولِهِ	إِلَيْهِ	عَلَيْهِ	صَوَابًا	مَا بَأَ
صَلَاةً	زَكَاةً	رَسُولٍ	مَحْفُوظٍ	مَقَامُهُ	خِتَتُهُ



لَوْحٍ حَوْلِ دِينِ بِشِيرٍ قَوْمِهِ هَدَيْنَا

بَيْنَنَا زَاهِدِينَ رَاكِعُونَ عِيسَى مُوسَى صُدُورِ

أَوَى قَوْلًا قَوْمًا مِيقَاتًا مِنْيرًا شَيْءِ

شَيْئًا هَرُونَ سُلَيْمَانَ شُهُودٌ قُودٌ وَدُودٌ

يَوْمَئِذٍ مَوْعِدُهُ كَرِيمٍ وَكِيلٍ نُورِهِ أَرَعَيْتَ

أَفَرَأَيْتَ مَوْعِظَةً مَوْضُوعَةً مَوْعِدَةً سَمِيعٌ عَزِيزٌ

يَدِيهِ حَيْثُ غَيْبُ سَمَوَاتٍ كَلِمَتٍ لَشَيْءٍ

قُرْشٍ بَالِيتَنَا مَهْدًا عِلْمٍ كِتَابٍ سَلَامٍ

أَوْذَيْنَا أَوْثَيْنَا أَوْحَيْنَا نُوحِيهَا التَّوْنِ اِمْنَوَابِ

تُدِيرُونَهَا فَلَاتَسِيلُوا مَاخَلَقْتُونِي فَلَا تُلُومُونِي وَلَا يُحِيطُونَ



الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 اِنَّا نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

### सबक नम्बर (11) : सुकून (जज़्म)

- जैसा कि आप पीछे पढ़ चुके हैं इस अलामत "و" को जज़्म कहते हैं जिस हर्फ़ पर जज़्म हो उसे साकिन कहते हैं।
- जज़्म वाला हर्फ़ अपने से पहले मु-तहरीक हर्फ़ से मिल कर पढ़ा जाता है।
- हम्ज़ए साकिना (أ، ع) को हमेशा झटका दे कर पढ़ें।
- हुरूफ़े कल्कला पांच हैं **ق، ط، ب، ج، د** इन का मज्मूआ **قُطِبْ جَدٍ** है।
- कल्कला के मा'ना जुम्बिश और ह-र-कत के हैं इन हुरूफ़ के अदा करते वक़्त मख़्ज में जुम्बिश सी हो जिस की वजह से आवाज़ लौटती हुई निकले।
- जब हुरूफ़े कल्कला साकिन हों तो उन में कल्कला ख़ूब ज़ाहिर होगा।
- इस सबक में हुरूफ़े कल्कला व हम्ज़ए साकिना की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें और मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाजेह फ़र्क करें।

اُط	اِط	اَط	اُث	اِث	اَث
اُذ	اِذ	اَذ	اُز	اِز	اَز
اُث	اِث	اَث	اُظ	اِظ	اَظ
اُص	اِص	اَص	اُس	اِس	اَस
اُض	اِض	اَض	اُد	اِد	اَद



اَلْ اِلْ اَكْ اَقْ اِقْ اُقْ

اَهْ اِهْ اُھْ اَحْ اِحْ اُحْ

اَءْ اِءْ اُءْ اَعْ اِعْ اُعْ

اَخْ اِخْ اُخْ اَغْ اِغْ اُغْ

اَبْ اِبْ اُبْ اَمْ اِمْ اُمْ

اَوْ اَوْ اِفْ اِوْ اُفْ

ساकिन سے پہلے  
جہر نہیں آتا

اَلْ اِلْ اُلْ اَنْ اِنْ اُنْ

اَرْ اِرْ اُرْ اَجْ اِجْ اُجْ

اَشْ اِشْ اُشْ اِیْ اِیْ اُیْ

ساकिन سے پہلے  
پیش نہیں آتا

مشک

قُلْ اِنْ عَنِ مَنْ بَلْ



لَمْ	كَمْ	هَمْ	ذُقْ	قَدْ
إِصْطَبِرْ	مُسْتَطِرْ	فَاغْفِرْ	أَعِينْ	أَعْنَابًا
زَجَرَةٌ	نُطْقَةٌ	مُدْهِنُونَ	أَبْوَابًا	فَاذْرُقْ
يُقْرِضْ	يُغْنِيْ	تَجْرِيْ	جَمْعًا	فَتَحْ
مُؤْمِنِينَ	مُؤْمِنُونَ	يُؤْمِنُونَ	مُؤَصَّدَةٌ	إِقْرَأْ
شَانُ	كَاسًا	بِئْسَ	يَشَا	نَشَا
إِثْمٌ	يَبْجَثُ	أَحْيَا	أُخْرَى	إِذْهَبْ
أَشَدُّ	إِرْكَبْ	حُشِرْتُ	نُشِرْتُ	أَحْضَرْتُ
طَمِسَتْ	فُرِجَتْ	نُسِفَتْ	يُظْلَمُونَ	يُظْهَرُ
إِصْدِرْ	بَيْنَكُمْ	بَيْنَهُمْ	فَضْلِكَ	عَلَيْهِمْ
أَعْمَالَهُمْ	أَعْمَالَكُمْ	أَيْدِيَهُمْ	يَسْتَبْدِلْ	يَسْتَفْتِحُونَ



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 اِنَّا نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

**सबक नम्बर (12) : नून साकिन और तन्वीन ( इज़हार, इख़फ़ा )**

➤ नून साकिन और तन्वीन के चार काइदे हैं (1) इज़हार (2) इख़फ़ा (3) इदग़ाम (4) इक्लाब ।

➤ (1) **इज़हार** : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े हल्की में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इज़हार होगा या 'नी नून साकिन और तन्वीन में गुना नहीं करेंगे । हुरूफ़े हल्की छ "6" हैं और वोह येह हैं :

ع, هـ, ح, خ, ج, د

➤ (2) **इख़फ़ा** : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े इख़फ़ा में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इख़फ़ा करें या 'नी नून साकिन और तन्वीन में गुना कर के पढ़ें । हुरूफ़े इख़फ़ा पन्धरह "15" हैं और वोह येह हैं :

ت, ث, ج, د, ذ, ز, س, ش, ص, ض, ط, ظ, ف, ق, ك

➤ **नोट** : इदग़ाम और इक्लाब के काइदे सबक नम्बर 14 में मौजूद हैं ।

مِنْ أَجَلٍ	مِنْ هَادٍ	مِنْ عَلَقٍ	مِنْ حَكِيمٍ
مِنْ غَفُورٍ	مِنْ خَوْفٍ	فَبِمَنْ تَبِعَ	مِنْ ثَمَرَةٍ
مِنْ جُوعٍ	مِنْ دُونِكُمْ	مِنْ ذَهَبٍ	فَإِنْ زِلَلْتُمْ
مَنْ سَفِهَ	مَنْ شَكَرَ	مِنْ صَلَاحٍ	إِنْ ضَلَلْتُ
مِنْ طِينٍ	مَنْ ظَلَمَ	مِنْ فُرُوجٍ	مِنْ قَبْلِ
مِنْ كِتَابٍ	يَلْنُونَ	مِنْهُمْ	أَنْعَمْتَ



وَأَنحَرْ	فَسَيُغْضُونَ	وَالْمُنْحَنَةُ	أَنْتَ
تَلْسُونَ	نُنَشِّرُهَا	يَنْصُرُونَ	مَنْصُودٍ
يَنْطِقُونَ	أَنْظُرْ	أَنْفُسِكُمْ	يَنْقُضُونَ
مِنْكُمْ	عَذَابًا إِلَيْهَا	خَيْرٌ تَجِدُوهُ	عَدْنٍ تَجْرِي
بَلَدًا أَمِنًا	قَوْلًا ثَقِيلًا	شِهَابٍ ثَاقِبٍ	
نُوحًا هَدَيْنَا	فَصَبْرٌ جَمِيلٌ	خَلْقٍ جَدِيدٍ	
جُرْفٍ هَارٍ	كَأَسَادِهَا قَا	بَحْسٍ دَرَاهِمَ	
سَمِيعٌ عَلِيمٌ	سِرَاعًا ذَلِكْ	يَتَّبِعُ ذَا مَقْرَبَةٍ	
خَلْقٍ عَظِيمٍ	صَعِيدًا زَلَقًا	يَوْمَئِذٍ زُرْقًا	
قَرْضًا حَسَنًا	قَوْلًا سَدِيدًا	بِقَلْبٍ سَلِيمٍ	
مُلْكٍ حَسَابِيَةٍ	بِأَسٍ شَدِيدٍ	عَذَابٍ شَدِيدٍ	



رِجَالٌ صَدَقُوا

عَمَلًا صَالِحًا

تَوَمَّا غَيْرُكُمْ

مُسْفِرَةٌ ضَاحِكَةٌ

عَذَابًا ضَعْفًا

قَلِيلَةً غَلَبَتْ

سَمَوَاتٍ طَبَاقًا

سَبْحًا طَوِيلًا

عَلِيمٌ خَبِيرٌ

نَفْسٍ ظَلَمَتْ

سَحَابٍ ظَلَمَتْ

رَفَرٍ خُضِرَ

ثَنَاءٌ قَلِيلًا

سُبُلًا فِجَاجًا

تَوَمَّا فَاسِقِينَ

كَرَامًا كَاتِبِينَ

رَسُولٍ كَرِيمٍ

فَتَحٌ قَرِيبٌ

يَا سَمِيعُ

100 बार रोज़ाना जो पढ़े और इस दौरान गुफ्त-गू न करे  
और पढ़ कर दुआ मांगे ।

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो मांगेगा पाएगा ।

(40 रूहानी इलाज, स. 7)



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 إِنَّا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

### सबक नम्बर (13) : तश्दीद

- तीन दन्दान " **و** " वाली शकल को **तश्दीद** कहते हैं। जिस हर्फ पर तश्दीद हो उसे मुशहद कहते हैं।
- मुशहद हर्फ को दो मर्तबा पढ़ें एक मर्तबा अपने से पहले वाले मु-तहर्रिक हर्फ से मिला कर और दूसरी मर्तबा खुद अपनी ह-र-कत के मुताबिक ज़रा रुक कर।
- नून मुशहद और मीम मुशहद में हमेशा गुन्ना होता है गुन्ना के मा'ना नाक में आवाज़ ले जाना है गुन्ना की मिक्दार एक अलिफ के बराबर है।
- जब हुरूफ़े कल्कला मुशहद हों तो उन्हें जमाव के साथ अदा करते हुए कल्कला करेंगे।
- पहला हर्फ मु-तहर्रिक, दूसरा हर्फ साकिन और तीसरा हर्फ मुशहद हो तो अक्सर मर्तबा (हमेशा नहीं) साकिन हर्फ को छोड़ देंगे और मु-तहर्रिक हर्फ को मुशहद हर्फ से मिला कर पढ़ेंगे जैसे **عَبْدُكَ** (को **عَبْدُكَ** पढ़ेंगे)
- इस सबक में तश्दीद की मश्क के साथ साथ हुरूफ़े करीबुस्सौत या 'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाजेह फ़र्क करें।

اَٹ	اِٹ	اُٹ	اَٹ	اِٹ	اُٹ
اَز	اِز	اُز	اَز	اِز	اُز
اَظ	اِظ	اُظ	اَظ	اِظ	اُظ
اَس	اِس	اُس	اَس	اِس	اُس
اَد	اِد	اُد	اَد	اِد	اُد
اَك	اِك	اُك	اَك	اِك	اُك



أَهْ	إَهْ	أَهْ	أَهْ	أَحْ	أَحْ
أَعْ	إَعْ	أَعْ	أَعْ	أَخْ	أَخْ
أَبْ	إَبْ	أَبْ	أَبْ	أَمْ	أَمْ
أَوْ	إَوْ	أَوْ	أَوْ	أَفْ	أَفْ
أَلْ	إَلْ	أَلْ	أَلْ	أَنَّ	أَنَّ
أَزْ	إَزْ	أَزْ	أَزْ	أَجْ	أَجْ
أَشْ	إَشْ	أَشْ	أَشْ	أَيَّ	أَيَّ
رَبْ	رَبِّيْ	رَبِّيْ	رَبِّيْ	إِنَّ	إِنَّا
مِنَّا	مِنِّيْ	مِنِّيْ	مِنِّيْ	وَلَهَا	حَبَبْ
وَالْتَيْنِ	بِالتَّقْوَى	بِالتَّقْوَى	بِالتَّقْوَى	فِي الْحَبِّ	شَحْ
مُسَخَّرَاتِ	صَدَقْ	تَصَدَّى	تَصَدَّى	أَلَدَرَجَاتِ	مِن الدَّامِعِ
الرَّحْمَنِ	نَزَلَ	فَسُلِّسَتْ	فَسُلِّسَتْ	وَالشَّمْسِ	نَقُصْ
فَضَلْنَا	وَالضُّحَى	وَالظُّوْرَ	وَالظُّوْرَ	وَالظَّالِمِ	أَلطَّلَاقُ
لِلظَّالِمِينَ	سُعْرَتْ	يُوفَ	يُوفَ	حَقَّتْ	حَقُّ
وَالَّذِينَ	مِمَّا	أُمَّةٍ	أُمَّةٍ	فَأَمَّهُ	مُسَمَّى
				جَنَّتْ	جَنَّتْ







مِنْ مَثَلِهِ	مِنْ نَصِيرٍ	مِنْ نُظْفَةٍ	مِنْ مَشْهَدٍ
مِنْ رَبِّكَ	مِنْ رَبِّهِمْ	مِنْ لَدُنْهُ	يَكُنْ لَهُ
كِتَابًا يَلْقَاهُ	رَجُلٌ يَسْغَى	هُدًى وَذِكْرَى	وُجُوهًا يَوْمَئِذٍ
بِرَحْمَةٍ مِنْهُ	سِرَاجًا مُنِيرًا	حِطَّةً نَنْفِرُ لَكُمْ	خَلَقَ نَعِيدُهُ
مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ	رُءُوفٌ رَحِيمٌ	مُصَدِّقًا لِمَا	وَيْلٌ لِّكُلِّ
مِنْ بَعْدٍ	مِنْ بَقْلِهَا	أَنْبُئُهُمْ	لَيُنَبِّدَنَّ
قَوْلًا بَلِيغًا	خَيْرًا أَبْصِيرًا	جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ	كِرَامٍ بَرَرَةٍ
حَلْ بِهَذَا	صَمٌّ بَكُمْ		

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 آمَنَّا بِهَذَا قَاعُودٌ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### सबक नम्बर (15) : मीम साकिन के क्वाइद

- मीम साकिन के तीन क्वाइदे हैं । (1) इदगामे श-फवी (2) इख़फ़ाए श-फवी (3) इज़्हारे श-फवी ।
- (1) इदगामे श-फवी : साकिन के बा 'द दूसरी आ जाए तो साकिन में इदगामे श-फवी होगा या 'नी गुना करेंगे ।
- (2) इख़फ़ाए श-फवी : साकिन के बा 'द हर्फ़ आ जाए तो साकिन में इख़फ़ाए श-फवी होगा या 'नी गुना करेंगे ।
- (3) इज़्हारे श-फवी : साकिन के बा 'द हर्फ़ और के इलावा कोई भी हर्फ़ आ जाए तो साकिन में इज़्हारे श-फवी होगा या 'नी गुना नहीं करेंगे ।



أَنْتُمْ مُظْلِمُونَ	الْمَرَّةَ	كُنْتُمْ بِهِ	هُمْ فِيهَا
وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ	وَالْأَمْرُ	تَأْتِيهِمْ بَآيَاتٍ	أَمْضَى
أَتَيْتَكُمْ مِنْ كِتَابٍ	لَمْ يَلِدْ	عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ	وَأَمْطَرْنَا
فَهُمْ مُقْتَحُونَ	لَكُمْ دِينُكُمْ	تَرْوِيهِمْ بِحِجَارَةٍ	الْمَنْ شَرَحَ
وَهُمْ مُعْرِضُونَ	وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا	وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ	أَمْ صَبْرًا
لَهُمْ مِمَّا الْحُسْنَى	ذَلِكَ قَوْلُكُمْ	بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ	عَلَيْهِمْ غَضَبٌ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 إِنَّا بَعْدَ قَاعُوذٍ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### सबक नम्बर (16) : तफ़्खीम व तरकीक

- » तफ़्खीम के मा'ना हर्फ को पुर या 'नी मोटा पढ़ना और तरकीक के मा'ना हर्फ को बारीक पढ़ना है।
- » तीन हुरूफ़ **ता**, **ला**, **आ** कभी पुर या 'नी मोटे और कभी बारीक पढ़े जाते हैं।
- » **आ** : अलिफ़ से पहले अगर पुर हर्फ़ आ जाए तो अलिफ़ को पुर और बारीक हर्फ़ आ जाए तो अलिफ़ को बारीक पढ़ें।
- » **ला** : इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के **ला** से पहले हर्फ़ पर ज़बर या पेश हो तो इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के **ला** को पुर पढ़ें और इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के **ला** से पहले हर्फ़ के नीचे ज़ेर हो तो इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के **ला** को बारीक पढ़ें।
- » इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के **ला** के इलावा बाकी तमाम **ला** बारीक पढ़ें।
- » **ता** को पुर पढ़ने की सूरतें : **ता** पर ज़बर या पेश हो, **ता** पर दो ज़बर या दो पेश हों, **ता** पर खड़ा ज़बर हो,



ۛ ساकिन سے پہلے ہُرفِ پر جُبر یا پेश ہو، ۛ ساकिन سے پہلے آارِجی جِبر ہو، ۛ ساकिन سے پہلے جِبر دُسرے کالِیمے مَں ہو، ۛ ساकिन کے با'دِ ہُروفے مُستا'لِیا مَں سے کوئی ہُرفِ اُسی کالِیمے مَں ہو ।

» ۛ کو باِریک پڑنے کی سُورتَں : ۛ کے نیچے جِبر یا دو جِبر ہوں، ۛ ساकिन سے پہلے جِبرے اُسلی اُسی کالِیمے مَں ہو، ۛ ساकिन سے پہلے ۛ ساکِنا ہو ।










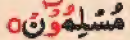








» آارِجی ہ-ر-کُت : کُراِنے پاک مَں با'جِ کالِیماِتِ اَلِیف سے شُروُ اُہتے ہِں اُور اَلِیف پر کوئی ہ-ر-کُت نَہی اُہتی اُن اَلِیف پر جو بَہی ہ-ر-کُت لگا کر پڑَے گا وہ ہ-ر-کُت آارِجی اُہگی جَیسے اَلِیف کے نیچے جِبرے آارِجی ہِے ।

نوٹ : اِک ہی کالِیمے مَں ۛ ساकिन سے پہلے جِبرے اُسلی ہو اُور اِس کے با'دِ ہُرفِ مُستا'لِیا ہو تو ۛ ساकिन کو پُر پڑَے گا جَیسے مِضالِہ

قَالَ	صِرَاطٌ	سِرَاجًا	كَانَ	مَالًا	مَفَازًا
طَالِبٌ	تَابُوا	خَالِدًا	عَايِدٌ	غَاسِقِي	طَعَامٍ
اللَّهُ	وَاللَّهُ	قَالَهُ	إِنَّ اللَّهَ	هُوَ اللَّهُ	مِنَ اللَّهِ
رَسُولُ اللَّهِ	رَضِيَ اللَّهُ	قَالُوا اللَّهُمَّ	لِلَّهِ	بِاللَّهِ	بِسْمِ اللَّهِ
قُلِ اللَّهُمَّ	مَاوَلَهُمْ	إِلَّا الَّذِينَ	إِنَّ الَّذِينَ	عَلَى	صَلَاةٍ
رَجُلٌ	أَلَم تَرَ	رُزِقُوا	أَكْثَرُ	أَجْرًا	أَجْرٌ
إِنْزِهِم	عَرْشُ	أَمْ صَبَرْنَا	تُرْجِعُونَ	يُرْزَقُونَ	إِزْجِعْ
إِزْجِعُوا	إِزْجِعِي	إِزْكَوْا	رَبِّ ارْحَمْهُمَا	رَبِّ ارْجِعُونِ	إِنْ ارْتَبْتُمْ
أَمْ ارْتَابُوا	كُلُّ فِرْقٍ	فِرْقَةٍ	مِزْصَادٍ	فِي قِرْطَاسٍ	وَالْقَهَّارِ
رِجَالٌ	أَمِرٌ	فَاصِبٌ	قُمْ فَأَنْذِرْ	خَيْرٌ	نَذِيرٌ



शबक नम्बर (17) : महात

1. मद के मा'ना दराज करना और खींचना है। मद के दो सबब हैं (1) हम्जह  (2) सुकून   
 2. मद की छ' अक्साम हैं। (1) मदे मुत्तसिल (2) मदे मुन्फसिल (3) मदे लाजिम (4) मदे लीन लाजिम  
 (5) मदे आरिज (6) मदे लीन आरिज।  
 3. (1) मदे मुत्तसिल : हुरूफे मद्दा के बा'द हम्जह उसी कलिमे में हो तो मदे मुत्तसिल होगा। जैसे   
 (2) मदे मुन्फसिल : हुरूफे मद्दा के बा'द हम्जह दूसरे कलिमे में हो तो मदे मुन्फसिल होगा। जैसे   
 4. मदे मुत्तसिल और मदे मुन्फसिल को दो, ढाई या चार अलिफ तक खींच कर पढ़ें।  
 5. (3) मदे लाजिम : हुरूफे मद्दा के बा'द सुकूने अस्ली (  ,  ) हो तो मदे लाजिम होगा। जैसे   
 (4) मदे लीन लाजिम : हुरूफे लीन के बा'द सुकूने अस्ली (  ) हो तो मदे लीन लाजिम होगा। जैसे   
 6. मदे लाजिम और मदे लीन लाजिम को तीन, चार या पांच अलिफ तक खींच कर पढ़ें।  
 7. (5) मदे आरिज : हुरूफे मद्दा के बा'द आरिजी सुकून हो ( या'नी वक्फ की वजह से कोई हर्फ साकिन हो जाए )  
 तो मदे आरिज होगा। जैसे   
 8. (6) मदे लीन आरिज : हुरूफे लीन के बा'द आरिजी सुकून हो ( या'नी वक्फ की वजह से कोई हर्फ साकिन हो  
 जाए ) तो मदे लीन आरिज होगा। जैसे   
 9. मदे आरिज और मदे लीन आरिज को तीन अलिफ तक खींच कर पढ़ें।  
 10. मद्दात के हिज्जे इस तरह करें जैसे  जै =  ज़बर ,  ज़बर =  ज़ै  
 ज़ै =  ज़ै दो ज़बर =  ज़ै

(30)



يٰٓبَنِي إِسْرَآئِيلَ	مَآلًا	دَابَّةً	الْبَنَ	الذَّكَرَيْنِ
جَانُ	مُدْهَامَتَيْنِ	أَتَجَاوَزُ	كَافَّةً	الْحَاقَّةُ
حَاجُوكَ	وَحَاجَةً	تَحْضُونَ	يُحَادِّثُونَ	أَنْ يَتَمَآسَا
يَاوَلِي الْأَلْبَابِ	يَتَسَاءَلُونَ	رَبِّ الْعَالَمِينَ	خَوْفٍ	قُرَيْشٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 أَشْأَتُهُمْ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### शबक नम्बर (18) : हुरूफे मुक़तआत

- » हुरूफे मुक़तआत कुरआने पाक की बा 'ज' सूरतों के शुरूअ में आते हैं ।
- » इन हुरूफ को मुफ़िद हुरूफ की तरह अलग अलग इस तरह पढ़ें कि महात की मिक्दार पूरी अदा हो नीज इफ़ा व इदगाम आने की सूरत में गुना भी करें ।
- » أَلِفْ لَامٌ وَمِيمٌ ۝ أَلِلْهُ ۝ وَكَفٍ ۝ أَلِلْهُ ۝ أَلِفْ لَامٌ وَمِيمٌ ۝ أَلِلْهُ ۝ (1) वस्ल ۝ أَلِفْ لَامٌ وَمِيمٌ ۝ أَلِلْهُ ۝ (2) को पढ़ने के दो तरीके हैं

صَّ	قَّ	نَّ	ظَهْ
صَادَّ	قَاتَّ	نُونْ	ظَاهَا
يِسْ	طِسْ	حَمْ	الرَّ
يَاسِيْنَ	طَاسِيْنَ	حَامِيْمٌ	أَلِفْ لَامٌ رَا
الْقَ	الْمَزْ	حَمْ	عَسَقْ
أَلِفْ لَامٌ وَمِيمٌ	أَلِفْ لَامٌ وَمِيمٌ رَا	حَامِيْمٌ	عَيْنٌ سِيْنٌ قَاتَّ



طَسَمَ طَاسِينَ وَمِيمَ  
الْبَصَّ أَيْفَ لَامٍ وَمِيمَ صَادَ  
الْمَ ۝ اللَّهُ أَيْفَ لَامٍ وَمِيمَ ۝ أَنَّهُ  
كَهَيْعَصَ كَافَ مَا يَأَعِيَنَ صَادَ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“ا” ज़ाईद अलिफ़ : (19) सबक नम्बर

❧ कुरआने पाक में बा 'ज' जगह अलिफ़ पर गोल दाएरे का निशान “ ۞ ” होता है ऐसे अलिफ़ को ज़ाईद अलिफ़ कहते हैं इस अलिफ़ को न पढ़ें ।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ پ ۴ ، آل عمران (۱۵۸)	أَفَأَيْنَ مِتَّ پ ۱۴ ، الانبیاء (۳۳)	أَفَأَيْنَ تَاتَ پ ۴ ، آل عمران (۳۳)	أَنَا ( هر جگاه )
مَلَأْنِيهِ ( هر جگاه )	لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ پ ۱۵ ، الکہف (۲۸)	لِشَآئٍ پ ۱۵ ، الکہف (۳۳)	لَا إِلَهَ إِلَّا الْجَحِيمُ پ ۲۳ ، الشُّعَرَاءُ (۱۸)
لَا أَنْتُمْ پ ۱۸ ، العنکبوت (۱۳)	لَا أَذْبَحَتْهُ پ ۱۹ ، النمل (۲۱)	وَلَا أَوْصَعُوا پ ۱۰ ، التوبة (۱۴)	أَنْ تَبُوءُوا پ ۶ ، المائدة (۲۹)
وَتَبُوءُوا پ ۱۹ ، الفرقان (۲۸)	تَبُوءُوا پ ۲۰ ، العنکبوت (۲۸) پ ۱۴ ، النجم (۵۱)	وَمَلَأْنِيهِمْ پ ۱۱ ، یونس (۸۲)	مِنْ نَبَأٍ پ ۷ ، الانعام (۳۳)
لِيَذَّبُونِي پ ۲۱ ، الروم (۳۹)	لَنْ نَدْعُوَا پ ۱۵ ، الکہف (۱۲)	لَتَسْتَلُوا پ ۱۳ ، الرعد (۳۵)	إِنْ تَبُوءُوا پ ۱۲ ، هود (۱۸)
قَوَارِيِدَا پ ۲۹ ، النمر (۱۱)	سَلَسِلَا پ ۲۹ ، النمر (۲)	وَتَبْلُوا پ ۲۶ ، محمد (۲۱)	لِيَبْلُوا پ ۲۶ ، محمد (۲)



» इन छ<sup>6</sup> कलिमात में इस निशान "○" वाले अलिफ़ को वस्ल में न पढ़ें लेकिन वक्फ़ में पढ़ें ।

لَكِنَّا	الظُّنُونَا	الرَّسُولَا	السَّبِيلَا	قَوَارِيذَا	أَنَا
प १० • الکہف ۱۶	پ ۲۱ • الاحزاب ۱۰	پ ۲۲ • الاحزاب ۲۱	پ ۲۲ • الاحزاب ۲۲	پ ۲۹ • النمر ۱۵ (پہلا)	(ہر جگہ)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

सबक नम्बर (20): मु-तफ़र्रिक़ कवाइद

» इज़हारे मुत्लक़: इन चार कलिमात में नून साकिन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून एक कलिमे में आने की वजह से इदग़ाम नहीं बल्कि इज़हारे मुत्लक़ होगा इस लिये इन चारों कलिमात में गुन्ना न करें ।

دُنْيَا	بُنْيَا	صُنَا	قُنَا
---------	---------	-------	-------

» सक्तह: आवाज़ रोक कर सांस लिये बिगैर आगे पढ़ने को सक्तह कहते हैं या'नी आवाज़ रुक जाए और सांस जारी रहे । इन चार कलिमात में सक्तह वाजिब है सक्ते का हुक्म येह है कि मु-तह़र्रिक़ को साकिन किया जाए और दो ज़बर को अलिफ़ से बदल कर पढ़ा जाए ।

وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ	كَلَّابِلَ رَانَ	مِنْ مَرْقِدِنَا هَذَا	عَوَجَاءَ قَيْبًا
प २९ • القيمة ۱۴	پ ۳۰ • المطففين ۱۳	پ ۲۳ • یس ۵۲	پ ۱۵ • الکہف ۱

» سیّق़: कुरआने पाक में चार कलिमात سے लिखे जाते हैं और سَاّد पर बारीक़ भी लिखा होता है इन के पढ़ने की तफ़्सील इस तरह है: (1) और (2) में सिर्फ़ س भी लिखा जाता है इन के पढ़ने की तफ़्सील इस तरह है: (1) और (2) में सिर्फ़ س पढ़ें, (3) में स और ص दोनों पढ़ना जाइज़ है, (4) में सिर्फ़ ص पढ़ें ।

يَبْصُطُ	بَصْطَةٌ	أَمَّهُمُ الْمُصْطِطُونَ	بِصْطِيرٍ
پ ۲ • البقرة ۱۲۵	پ ۸ • الاعراف ۱۹	پ ۲۴ • الطور ۲۴	پ ۳۰ • الغاشية ۱۳



❖ तस्हील : तस्हील के मा'ना हैं नरमी करना या 'नी दूसरे हमज़ह को नरमी के साथ पढ़ें। कुरआने पाक में सिर्फ़ एक कलिमे में तस्हील वाजिब है।

❖ इमालह : ज़बर को ज़ेर की तरफ़ और الف को ل की तरफ़ माइल कर के पढ़ने को इमालह कहते हैं। इमालह की ل को उर्दू के लफ़्ज़ क़तरे की ل की तरह पढ़ें या 'नी ري नहीं बल्कि ر पढ़ें।

❖ इमालह के हिज्जे इस तरह करें : جيم جيم ज़बर=مَجْرَها, इमाले वाली ر=مَجْرَها=عَالف, ज़बर=عَالف, مَجْرَها=عَالف

❖ بِئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ इस कलिमे में لام से पहले और لام के बा'द दोनों الف न पढ़ें बल्कि لام को ज़ेर दे कर पढ़ें।

بِئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ

प २१, الحجرات ॥

مَجْرَها

प १२, هود ॥

عَالف عَالف عَالف

प २३, طه السجده ॥

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
اِنَّا بَعْدَ فَاغْوَةٍ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

### सबक नम्बर (21) : वक्फ़

❖ वक्फ़ : वक्फ़ के मा'ना ठहरने और रुकने के हैं। या 'नी जिस कलिमे पर वक्फ़ करें तो उस कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर आवाज़ और सांस दोनों को ख़त्म कर दें।

❖ कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर, दो पेश, खड़ा ज़ेर, उल्टा पेश हो तो उस हर्फ़ को वक्फ़ में साकिन कर दें।

❖ कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर दो ज़बर हों तो उन्हें वक्फ़ में अलिफ़ से बदल दें।

❖ कलिमे के आखिर में गोल "ة" पर ख़्वाह कोई भी ह-र-कत हो या तन्वीन उसे वक्फ़ में "ه" से बदल दें।

❖ खड़ा ज़बर, हुरुफ़े महा और साकिन हर्फ़ वक्फ़ में तब्दील नहीं होते।

❖ मुशहद हर्फ़ पर वक्फ़ की सूरत में तश्दीद बाक़ी रखें मगर ह-र-कत को ज़ाहिर न होने दें।

❖ नून कुर्नी : तन्वीन के बा'द हमज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हमज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को



जेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है इसे नून कुत्नी कहते हैं।

» अलामाते वक्फ़: चन्द अलामाते वक्फ़ की तफ़्सील दर्जे जैल है।

» ○ : येह वक्फ़े ताम और आयत मुकम्मल होने की अलामत है यहां ठहरना चाहिये।

» م : येह वक्फ़े लाजिम की अलामत है यहां जरूर ठहरना चाहिये।

» ط : येह वक्फ़े मुत्लक की अलामत है यहां ठहरना बेहतर है।

» ح : येह वक्फ़े जाइज की अलामत है यहां ठहरना बेहतर और न ठहरना भी जाइज है।

» ز : येह वक्फ़े मुजव्वज की अलामत है यहां ठहरना जाइज मगर न ठहरना बेहतर है।

» ص : येह वक्फ़े मुख़ब़स की अलामत है यहां मिला कर पढ़ना चाहिये।

» لا : अगर आयत के ऊपर ○ लिखा हो तो ठहरने और न ठहरने में इख़िलाफ़ है आयत के इलावा لا लिखा हो तो न ठहरें।

» इआदह: वक्फ़ करने के बा'द पीछे से मिला कर पढ़ने को इआदह कहते हैं।

بِالْحَقِّ بِالْحَقِّ	شَفَقَتَيْنِ شَفَقَتَيْنِ	فِيهِ فِيهِ	مُسْتَقِيمٍ مُسْتَقِيمٍ	نَادِمِينَ نَادِمِينَ	صَادِقِينَ صَادِقِينَ
قِسْطٍ قِسْطٍ	شَيْءٍ شَيْءٍ	شَهْرٍ شَهْرٍ	مِنْ قَبْلُ مِنْ قَبْلُ	يَشَاءُ يَشَاءُ	نَسْتَعِينُ نَسْتَعِينُ
بِأَمْرِ بِأَمْرِ	عِبَادَةٍ عِبَادَةٍ	بِهِ بِهِ	بَرٍّ بَرٍّ	قَدِيرٍ قَدِيرٍ	لَهُ لَهُ
نَبِيًّا نَبِيًّا	عِلْمًا عِلْمًا	أَلْفَاكًا أَلْفَاكًا	مَوَازِينَهُ مَوَازِينَهُ	أَخْلَدَهُ أَخْلَدَهُ	رَبِّهِ رَبِّهِ



قُوَّةٌ قُوَّةٌ	رَقَبَةٌ رَقَبَةٌ	جَارِيَةٌ جَارِيَةٌ	وَتَوَلَّى وَتَوَلَّى	مِنَ الْأُولَى مِنَ الْأُولَى	فَتَرْضَى فَتَرْضَى
وَالْحَزَرَ وَالْحَزَرَ	فَارْقَبْ فَارْقَبْ	فَحَدِّثْ فَحَدِّثْ	فِيهَا فِيهَا	تَهْتَدُوا تَهْتَدُوا	قُولِي قُولِي
خَيْرًا خَيْرًا	الْوَصِيَّةُ الْوَصِيَّةُ	شَيْبًا شَيْبًا	السَّمَاءِ السَّمَاءِ	مُنِيبٍ مُنِيبٍ	ادْخُلُوهَا ادْخُلُوهَا
مُبِينٍ مُبِينٍ	اقْتُلُوا اقْتُلُوا	قَدِيرٍ قَدِيرٍ	الَّذِي الَّذِي	خَيْرًا خَيْرًا	الَّذِي الَّذِي

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَنَا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

### सबक नम्बर (22) : नमाज़

- » इस सबक को हिज्जे और रवां दोनों तरीकों से पढ़ें ।
- » इस सबक में भी पिछले तमाम अस्बाक के क्वाइद और हुरूफ़ की अदाएगी का खास खयाल रखें बिल खुसूस हुरूफ़े करीबुस्सौत या 'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाजेह फ़र्क करें ।
- » याद रखिये ! इन हुरूफ़ में फ़र्क न करने की वजह से अगर मा 'ना फ़ासिद हो गए तो नमाज़ न होगी ।

» तक्बीरे तहरीमा : اللَّهُ أَكْبَرُ

» सना : سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

» तअव्वुज : أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ



❧ तस्मिन् ऋषिः ०

❧ सू-स्तुल फातिहा :

لَحْمَدُ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ مَلِكُ يَوْمِ الدِّينِ ۝  
إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ  
أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝ آمِينَ

❧ सू-स्तुल इस्लामः ०

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

❧ तस्मिन् ऋषिः ०

❧ तस्मिन् ऋषिः ०

❧ तस्मिन् ऋषिः ०

❧ तस्मिन् ऋषिः ०

❧ तस्मिन् ऋषिः ०  
السَّحَابَاتُ لِلَّهِ وَالصَّالَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ  
وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ ۝ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَلِيَّ عِبَادَ اللَّهِ الصَّالِحِينَ ۝  
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ۝



﴿ دُعاۓ ابراہیم : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرٰهٖمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرٰهٖمَ اِنَّکَ حَبِیْدٌ مَّجِیْدٌ ۝ اَللّٰهُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرٰهٖمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرٰهٖمَ اِنَّکَ حَبِیْدٌ مَّجِیْدٌ ۝﴾

﴿ دُعاۓ ماسورہ : اَللّٰهُمَّ رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوۃِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاہُ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیْ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُومُ الْحِسَابُ ۝﴾

﴿ سلام : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ ۝﴾

﴿ دُعاۓ کونوٹ : اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَغِیْنُکَ وَنَسْتَغْفِرُکَ وَنُؤْمِنُ بِکَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَیْکَ وَنُشْرِیْ عَلَیْکَ الْخَیْرَ وَنَشْکُرُکَ وَلَا نُکْفِرُکَ وَنُخْلَعُ وَنَنْتَرُکَ مَنْ یَغْفِرُکَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا کَ نَعْبُدُ وَاِلَیْکَ نَصَلِّیْ وَنَسْجُدُ وَآلِیْکَ نَسْعٰی وَنُخْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَکَ وَنُحْشٰی عَذَابَکَ اِنَّ عَذَابَکَ بِالْکٰفِرِ مُلْحِقٌ ۝﴾

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلَائِکَتَہُ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ یٰ اَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا صَلُّوا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوا اَسْلِمًا ۝  
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعَدِنِ الْجُودِ وَالْکَرَمِ وَالْاِہْلِ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## सुवाल व जवाब

सुवाल :- हुरूफे मुफ़िदात कितने हैं ?

सबक नम्बर 1

जवाब :- हुरूफे मुफ़िदात 29 हैं।

सुवाल :- हुरूफे मुस्ता'लिया कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 1

जवाब :- हुरूफे मुस्ता'लिया सात हैं और वोह येह हैं - **خ ، ص ، ض ، ط ، ظ ، غ ، ق**

सुवाल :- हुरूफे मुस्ता'लिया को कैसे पढ़ते हैं और इन का मज्मूआ क्या है ?

सबक नम्बर 1

जवाब :- हुरूफे मुस्ता'लिया को हमेशा हर हालत में पुर या'नी मोटा पढ़ते हैं और इन का मज्मूआ **كُمْلُ مَسْتَدْرَأَاتٍ** है।

सुवाल :- ह-रकात किसे कहते हैं ?

सबक नम्बर 3

जवाब :- ज़बर **ـ**, ज़ेर **ـ**, पेश **ـ** को ह-रकात कहते हैं।

सुवाल :- ह-रकात को किस तरह पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 3

जवाब :- ह-रकात को बिगैर खींचे, बिगैर झटका दिये मा'रुफ पढ़ेंगे।

सुवाल :- तन्वीन किसे कहते हैं ?

सबक नम्बर 5

जवाब :- दो ज़बर **ـ**, दो ज़ेर **ـ**, और दो पेश **ـ** को तन्वीन कहते हैं। तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आखिर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की तरह होती है।

सुवाल :- हुरूफे मद्दा कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 7

जवाब :- हुरूफे मद्दा तीन हैं और वोह येह हैं **ألف ، وَاوْ ، ياء**

सुवाल :- **ألف** मद्दा, **وَاوْ** मद्दा और **ياء** मद्दा कब होगा ?

सबक नम्बर 7

जवाब :- **ألف** से पहले ज़बर हो तो **ألف** मद्दा, **وَاوْ** साकिन से पहले पेश हो तो **وَاوْ** मद्दा, **ياء** साकिन से पहले ज़ेर हो तो **ياء** मद्दा होगा।

सुवाल :- हुरूफे मद्दा को कैसे पढ़ते हैं ?

सबक नम्बर 7



जवाब :- हुरूफे मदा को एक अलिफ या'नी दो ह-रकात के बराबर खींच कर पढ़ते हैं ।

सुवाल :- खड़ी ह-रकात किसे कहते हैं ?

सबक नम्बर 8

जवाब :- खड़े ज़बर **ـ**, खड़े ज़ेर **ـ** और उल्टे पेश **ـ** को खड़ी ह-रकात कहते हैं ।

सुवाल :- खड़ी ह-रकात को कैसे पढ़ते हैं ?

सबक नम्बर 8

जवाब :- खड़ी ह-रकात को हुरूफे मदा की तरह एक अलिफ या'नी दो ह-रकात के बराबर खींच कर पढ़ते हैं ।

सुवाल :- हुरूफे लीन कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 9

जवाब :- हुरूफे लीन दो हैं **وَأُو** और **يَا** ।

सुवाल :- हुरूफे लीन को किस तरह पढ़ते हैं ?

सबक नम्बर 9

जवाब :- हुरूफे लीन को बिगैर खींचे बिगैर झटका दिये नरमी से मा'रुफ पढ़ते हैं ।

सुवाल :- **وَأُو** लीन और **يَا** लीन कब होगा ?

सबक नम्बर 9

जवाब :- **وَأُو** साकिन से पहले ज़बर हो तो **وَأُو** लीन और **يَا** साकिन से पहले ज़बर हो तो **يَا** लीन होगा ।

सुवाल :- कल्कला के क्या मा'ना हैं ?

सबक नम्बर 11

जवाब :- कल्कला के मा'ना जुम्बिश और ह-र-कत के हैं या'नी इन हुरूफ के अदा होते वक़्त मख़ज में जुम्बिश सी होती है जिस की वजह से आवाज़ लौटती हुई निकलती है ।

सुवाल :- हुरूफे कल्कला कितने हैं, कौन कौन से हैं और इन का मज्मूआ क्या है ?

सबक नम्बर 11

जवाब :- हुरूफे कल्कला पांच हैं और वोह येह हैं **ق، ط، ب، ج، د** हुरूफे कल्कला का मज्मूआ **قُطْبُ جَدٍ** है ।

सुवाल :- हुरूफे कल्कला में कब कल्कला ख़ूब ज़ाहिर होगा ?

सबक नम्बर 11

जवाब :- जब हुरूफे कल्कला साकिन हों तो उन में कल्कला ख़ूब ज़ाहिर होगा ।

सुवाल :- अगर कल्कला हुरूफ मुशहद हों तो उन्हें कैसे पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 11

जवाब :- जब कल्कला हुरूफ मुशहद हों तो उन्हें जमाव के साथ अदा करेंगे ।

सुवाल :- हमज़ए साकिना (**ة، ا، ؤ**) को कैसे पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 11



जवाब :- हम्ज़ए साकिना ( ء ) को हमेशा झटका दे कर पढ़ेंगे ।

सुवाल :- नून साकिन और तन्वीन के कितने काइदे हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 12

जवाब :- नून साकिन और तन्वीन के चार काइदे हैं और वोह येह हैं इज़हार , इख़फ़ा , इदग़ाम , इक्लाब ।

सुवाल :- इज़हार का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 12

जवाब :- नून साकिन और तन्वीन के बा'द हुरूफ़े हल्की में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इज़हार होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में गुन्ना नहीं करेंगे ।

सुवाल :- हुरूफ़े हल्की कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 12

जवाब :- हुरूफ़े हल्की छ' हैं और वोह येह हैं - ح , ع , ج , ا , ي , و ,

सुवाल :- इख़फ़ा का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 12

जवाब :- नून साकिन और तन्वीन के बा'द हुरूफ़े इख़फ़ा में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इख़फ़ा होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में गुन्ना कर के पढ़ेंगे ।

सुवाल :- हुरूफ़े इख़फ़ा कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 12

जवाब :- हुरूफ़े इख़फ़ा पन्दरह हैं और वोह येह हैं

ت , ث , ج , د , ذ , ز , س , ش , ص , ض , ط , ظ , ف , ق , ك -

सुवाल :- तश्दीद किसे कहते हैं और तश्दीद वाले हर्फ़ को क्या कहते हैं ?

सबक नम्बर 13

जवाब :- तीन दन्दान ّ वाली शकल को तश्दीद कहते हैं जिस हर्फ़ पर तश्दीद हो उसे मुशहद कहते हैं ।

सुवाल :- नون मुशहद और ميم मुशहद में क्या होगा ?

सबक नम्बर 13

जवाब :- نون मुशहद और ميم मुशहद में हमेशा गुन्ना होगा ।

सुवाल :- गुन्ना किसे कहते हैं और इस की मिक्दार क्या है ?

सबक नम्बर 13

जवाब :- नाक में आवाज़ ले जा कर पढ़ने को गुन्ना कहते हैं गुन्ना की मिक्दार एक अलिफ़ के बराबर है ।

सुवाल :- मुशहद हर्फ़ को किस तरह पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 13



जवाब :- मुश्हद हर्फ को दो<sup>2</sup> मर्तबा पढ़ेंगे एक मर्तबा अपने से पहले वाले मु-तहरिक हर्फ से मिला कर और दूसरी मर्तबा खुद अपनी ह-र-कत के मुताबिक ज़रा रुक कर।

सुवाल :- इदगाम का काइदा सुनाएं?

सबक नम्बर 14

जवाब :- नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून में से कोई हर्फ आ जाए तो इदगाम होगा। **و** और **ل** में बिगैर गुन्ना के बाकी चार में गुन्ना के साथ।

सुवाल :- हुरूफ़े यर-मलून कितने हैं और कौन कौन से हैं?

सबक नम्बर 14

जवाब :- हुरूफ़े यर-मलून छ<sup>6</sup> हैं और वोह येह हैं: **و، ل، م، ن، ی، ر**

सुवाल :- इक्लाब का काइदा सुनाएं?

सबक नम्बर 14

जवाब :- नून साकिन या तन्वीन के बा'द हर्फ **ب** आ जाए तो इक्लाब होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन को मीम से बदल कर इख़्फ़ा करेंगे या'नी गुन्ना कर के पढ़ेंगे।

सुवाल :- मीम साकिन के कितने काइदे हैं और वोह कौन कौन से हैं?

सबक नम्बर 15

जवाब :- मीम साकिन के तीन काइदे हैं और वोह येह हैं इदगामे श-फ़वी, इख़्फ़ाए श-फ़वी, इज़्हारे श-फ़वी।

सुवाल :- इदगामे श-फ़वी का काइदा सुनाएं?

सबक नम्बर 15

जवाब :- मीम साकिन के बा'द दूसरी **م** आ जाए तो मीम साकिन में इदगामे श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे।

सुवाल :- इख़्फ़ाए श-फ़वी का काइदा सुनाएं?

सबक नम्बर 15

जवाब :- मीम साकिन के बा'द **ب** आ जाए तो मीम साकिन में इख़्फ़ाए श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे।

सुवाल :- इज़्हारे श-फ़वी का काइदा सुनाएं?

सबक नम्बर 15

जवाब :- मीम साकिन के बा'द **ب** और **م** के इलावा कोई भी हर्फ आ जाए तो मीम साकिन में इज़्हारे श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना नहीं करेंगे।

सुवाल :- तफ़ख़ीम व तरकीक के क्या मा'ना हैं?

सबक नम्बर 16

जवाब :- तफ़ख़ीम के मा'ना हर्फ को **पुर** पढ़ना और तरकीक के मा'ना हर्फ को **बारीक** पढ़ना है।

सुवाल :- इसमे जलालत **الله** (عز وجل) के **لام** को कब **पुर** और कब **बारीक** पढ़ेंगे? सबक नम्बर 16



जवाब :- इसमें जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के **لام** से पहले हर्फ़ पर ज़बर या पेश हो तो इसमें जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के **لام** को पुर पढ़ेंगे और इसमें जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के **لام** से पहले हर्फ़ के नीचे ज़ेर हो तो इसमें जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के **لام** को बारीक पढ़ेंगे।

सुवाल :- **अलफ़** को कब **पुर** और कब **बारीक** पढ़ेंगे?

सबक नम्बर 16

जवाब :- **الف** से पहले पुर हर्फ़ आ जाए तो **الف** को पुर और बारीक हर्फ़ आ जाए तो **الف** को बारीक पढ़ेंगे।

सुवाल :- **ا** को **पुर** पढ़ने की सूरतें बताएं?

सबक नम्बर 16

जवाब :- (1) **ا** पर ज़बर या पेश हो (2) **ا** पर दो ज़बर या दो पेश हो (3) **ا** पर खड़ा ज़बर हो (4) **ا** साकिन से पहले हर्फ़ पर ज़बर या पेश हो (5) **ا** साकिन से पहले आरिज़ी ज़ेर हो (6) **ا** साकिन से पहले ज़ेर दूसरे कलिमे में हो (7) **ا** साकिन के बा'द हुरूफ़े मुस्ता'लिया में से कोई हर्फ़ इसी कलिमे में हो तो इन सब सूरतों में **ا** को पुर पढ़ेंगे।

सुवाल :- **ا** को **बारीक** पढ़ने की सूरतें बताएं?

सबक नम्बर 16

जवाब :- (1) **ا** के नीचे ज़ेर या दो ज़ेर हों (2) **ا** साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली इसी कलिमे में हो (3) **ا** साकिन से पहले **ا** साकिना हो तो इन सब सूरतों में **ا** को **बारीक** पढ़ेंगे।

सुवाल :- **आरिज़ी ज़ेर** किसे कहते हैं?

सबक नम्बर 16

जवाब :- कुरआने पाक में बा'ज कलिमात अलिफ़ से शुरू होते हैं और अलिफ़ पर कोई ह-र-कत नहीं होती उन अलिफ़ पर जो भी ह-र-कत लगा कर पढ़ेंगे वोह आरिज़ी ह-र-कत होगी जैसे **اِزْجِي** के **الف** के नीचे ज़ेरे आरिज़ी है।

सुवाल :- **मद** के क्या मा'ना हैं इस के कितने सबब हैं और कौन कौन से हैं?

सबक नम्बर 17

जवाब :- **मद** के मा'ना दराज़ करना और खींचना है **मद** के सबब दो "2" हैं (1) **हम्ज़ह** (2) **सुकून**।

सुवाल :- **मद** की कितनी किस्में हैं और कौन कौन सी हैं?

सबक नम्बर 17

जवाब :- **मद** की छ "6" किस्में हैं और वोह येह हैं (1) **मदे मुत्तसिल** (2) **मदे मुम्फ़सिल** (3) **मदे लाज़िम** (4) **मदे लीन लाज़िम** (5) **मदे आरिज़** (6) **मदे लीन आरिज़**।

सुवाल :- **मदे मुत्तसिल** कब होगा?

सबक नम्बर 17



जवाब :- हुरूफ़े मद्दा के बा'द हमज़ह इसी कलिमे में हो तो मद्दे मुत्तसिल होगा।

सुवाल :- मद्दे मुत्तसिल कब होगा ?

सबक नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा के बा'द हमज़ह दूसरे कलिमे में हो तो मद्दे मुत्तसिल होगा।

सुवाल :- मद्दे मुत्तसिल और मद्दे मुत्तसिल को कितना खींच कर पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 17

जवाब :- मद्दे मुत्तसिल और मद्दे मुत्तसिल को दो, ढाई या चार अलिफ़ तक खींच कर पढ़ेंगे।

सुवाल :- मद्दे लाज़िम कब होगा ?

सबक नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा के बा'द सुकूने अस्ली (  $\frac{و}{\text{}} \cdot \frac{ي}{\text{}}$  ) हो तो मद्दे लाज़िम होगा।

सुवाल :- मद्दे लीन लाज़िम कब होगा ?

सबक नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े लीन के बा'द सुकूने अस्ली (  $\frac{ي}{\text{}}$  ) हो तो मद्दे लीन लाज़िम होगा।

सुवाल :- मद्दे लाज़िम और मद्दे लीन लाज़िम को कितना खींच कर पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 17

जवाब :- मद्दे लाज़िम और मद्दे लीन लाज़िम को तीन, चार या पांच अलिफ़ तक खींच कर पढ़ेंगे।

सुवाल :- मद्दे आरिज़ कब होगा ?

सबक नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा के बा'द आरिज़ी सुकून हो या'नी वक्फ़ की वजह से कोई हर्फ़ साकिन हो जाए तो मद्दे आरिज़ होगा।

सुवाल :- मद्दे लीन आरिज़ कब होगा ?

सबक नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े लीन के बा'द आरिज़ी सुकून हो या'नी वक्फ़ की वजह से कोई हर्फ़ साकिन हो जाए तो मद्दे लीन आरिज़ होगा।

सुवाल :- मद्दे आरिज़ और मद्दे लीन आरिज़ को कितना खींच कर पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 17

जवाब :- मद्दे आरिज़ और मद्दे लीन आरिज़ को तीन अलिफ़ तक खींच कर पढ़ेंगे।

सुवाल :- ज़ाइद अलिफ़ किसे कहते हैं और क्या उसे पढ़ते हैं ?

सबक नम्बर 19

जवाब :- कुरआने पाक में बा'ज़ जगह अलिफ़ पर गोल दाएरा “○” का निशान होता है ऐसे अलिफ़ को ज़ाइद अलिफ़ कहते हैं और इस अलिफ़ को नहीं पढ़ते।

सुवाल :- مَنَافٍ، بُنْيَانٌ، مَنَافٍ और مَنَافٍ के नून साकिन में कौन सा क़ाइदा होगा ?

सबक नम्बर 20



**जवाब :-** इन चार कलिमात में नून साकिन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून एक कलिमे में आने की वजह से इदग़ाम नहीं बल्कि **इज़हारे मुत्लक** होगा इस लिये इन कलिमात में गुन्ना नहीं करेंगे।

**सुवाल :-** सक्तह किसे कहते हैं? सबक नम्बर 20

**जवाब :-** आवाज़ रोक कर सांस लिये बिगैर आगे पढ़ने को सक्तह कहते हैं या'नी आवाज़ रुक जाए और सांस जारी रहे।

**सुवाल :-** तस्हील के क्या मा'ना हैं? सबक नम्बर 20

**जवाब :-** तस्हील के मा'ना नरमी करना है या'नी दूसरे हम्ज़ह को नरमी के साथ पढ़ना।

**सुवाल :-** इमालह किसे कहते हैं? सबक नम्बर 20

**जवाब :-** ज़बर को ज़ेर और **الف** को **يا** की तरफ़ माइल कर के पढ़ने को इमालह कहते हैं।

**सुवाल :-** इमालह की **ل** को किस तरह पढ़ेंगे? सबक नम्बर 20

**जवाब :-** इमालह की **ل** को उर्दू के लफ़्ज़ क़तरे की **ل** की तरह पढ़ेंगे। या'नी **ل** नहीं बल्कि **ل** पढ़ेंगे।

**सुवाल :-** वक्फ़ के क्या मा'ना हैं? सबक नम्बर 21

**जवाब :-** वक्फ़ के मा'ना ठहरने और रुकने के हैं।

**सुवाल :-** वक्फ़ की हालत में कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर या दो पेश हों तो क्या करेंगे? सबक नम्बर 21

**जवाब :-** वक्फ़ की हालत में कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर या दो पेश हों तो उस हर्फ़ को साकिन कर देंगे।

**सुवाल :-** वक्फ़ की हालत में कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर दो ज़बर की तन्वीन हो तो क्या करेंगे?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** वक्फ़ की हालत में कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर दो ज़बर की तन्वीन हो तो उसे अलिफ़ से बदल देंगे।

**सुवाल :-** वक्फ़ की हालत में गोल **ت "ة"** हो तो क्या करेंगे? सबक नम्बर 21

**जवाब :-** गोल **ت "ة"** पर ख़्वाह कोई भी ह-र-कत हो उसे वक्फ़ में **ل** साकिन **ا** से बदल देंगे।

**सुवाल :-** नून कुल्नी किसे कहते हैं? सबक नम्बर 21

**जवाब :-** तन्वीन के बा'द हम्ज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हम्ज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को ज़ेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है उसे नून कुल्नी कहते हैं।



**सुवाल :-** गोल दाएरा "○" वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** येह वक्फे ताम और आयत मुकम्मल होने की अलामत है। इस पर ठहरना चाहिये।

**सुवाल :-** ۞ वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** येह वक्फे लाजिम की अलामत है यहां जरूर ठहरना चाहिये।

**सुवाल :-** ۞ वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** येह वक्फे मुत्लक की अलामत है यहां ठहरना बेहतर है।

**सुवाल :-** ۞ वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** येह वक्फे जाइज की अलामत है यहां ठहरना बेहतर और न ठहरना भी जाइज है।

**सुवाल :-** ۞ वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** येह वक्फे मुजव्वज की अलामत है यहां ठहरना जाइज मगर न ठहरना बेहतर है।

**सुवाल :-** ۞ वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** येह वक्फे मुख़ब़स की अलामत है यहां मिला कर पढ़ना चाहिये।

**सुवाल :-** ۞ पर वक्फ की वज़ाहत फ़रमाएं ?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** अगर आयत के ऊपर ۞ "۞" लिखा हो तो ठहरने और न ठहरने में इख़्तिलाफ़ है आयत के इलावा ۞ लिखा हो तो न ठहरें।

**सुवाल :-** इआदह किसे कहते हैं ?

सबक नम्बर 21

**जवाब :-** वक्फ करने के बा'द पीछे से मिला कर पढ़ने को इआदह कहते हैं।

**सुवाल :-** सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनन के लिये कौन सा वज़ीफ़ा पढ़ना चाहिये ?

सफ़ह़ा नम्बर 7

**जवाब :-** सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनन के लिये चलते फिरते **يَا خَيْرُ** पढ़ना चाहिये।

**सुवाल :-** इल्म के पांच द-रजात कौन कौन से हैं ?

सफ़ह़ा नम्बर 7

**जवाब :-** इल्म के पांच द-रजात येह हैं (1) ख़ामोशी (2) तवज्जोह से सुनना (3) जो सुना उसे याद रखना



(4) जो सीखा उस पर अमल करना (5) जो इल्म हासिल हुवा उसे दूसरों तक पहुंचाना ।

**सुवाल :-** हाफिज़ की मज्बूती का वजीफ़ा बताइये ?

सफ़हा नम्बर 12

**जवाब :-** **يَا عَلِيٍّ** 21 बार (अव्वल व आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के 40 रोज़ तक नहार मुंह पीने (या पिलाने) से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** (पीने वाले का) हाफिज़ा मज्बूत होगा ।

**सुवाल :-** सबक़ याद करने से पहले कौन सी दुआ पढ़नी चाहिये ?

**जवाब :-** सबक़ याद करने से पहले अव्वल व आखिर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ **اللَّهُمَّ اقْتَرِ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** पढ़नी चाहिये ।

**सुवाल :-** **वुजू** के कितने **फ़राइज़** हैं और कौन कौन से हैं ?

**जवाब :-** वुजू के चार फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. पूरा चेहरा धोना 2. कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना 3. चौथाई सर का मस्ह करना 4. टख़्ख़ों समेत दोनों पाउं धोना ।

**सुवाल :-** **गुस्ल** के कितने **फ़राइज़** हैं और कौन कौन से हैं ?

**जवाब :-** गुस्ल के तीन फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. कुल्ली करना 2. नाक में पानी चढ़ाना 3. तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना ।

**सुवाल :-** **तयम्मूम** के कितने **फ़राइज़** हैं और कौन कौन से हैं ?

**जवाब :-** तयम्मूम के तीन फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. निय्यत 2. सारे मुंह पर हाथ फैरना 3. कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह करना ।

**सुवाल :-** **नमाज़** की कितनी **शराइत** हैं और कौन कौन सी हैं ?

**जवाब :-** नमाज़ की छ शराइत हैं और वोह येह हैं (1) तह़ारत (2) सित्रे औरत (3) इस्तिक्बाले किब्ला (4) वक़्त (5) निय्यत (6) तक्बीरे तह़रीमा ।

**सुवाल :-** **नमाज़** के कितने **फ़राइज़** हैं और कौन कौन से हैं ?

**जवाब :-** नमाज़ के सात फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं :

(1) तक्बीरे तह़रीमा (2) क़ियाम (3) क़िराअत (4) रुकूअ

(5) सुजूद (6) क़ा'दए अख़ीरा (7) ख़ुरूजे बि सुन्द्ही ।



## अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझे हाफ़िज़े कुरआन बना दे

अज : शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा 'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि (دامت بركاتهم العالیة)

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) मुझे हाफ़िज़े कुरआन बना दे हो जाए सबक़ याद मुझे जल्द इलाही (عَزَّوَجَلَّ) सुस्ती हो मेरी दूर उठूं जल्द सवेरे हो मद्रसे का मुझ से न नुक़सान कभी भी छुड़ी न करूं भूल के भी मद्रसे की मैं उस्ताद हों मौजूद या बाहर कहीं मसरूफ़ ख़स्त हो शरारत की मेरी दूर इलाही (عَزَّوَجَلَّ) ! उस्ताद की करता रहूं हर दम मैं इताअत कपड़े मैं रखूं साफ़ तू दिल को मेरे कर साफ़ फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही (عَزَّوَجَلَّ) मैं साथ जमाअत के पढूं सारी नमाज़ें पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं सुन्नत के मुताबिक़ मैं हर इक़ काम करूं काश मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो अच्छा उस्ताद हों मां बाप हों अत्तार भी हों साथ

कुरआन के अहक़ाम पे भी मुझ को चला दे या रब (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मेरा हाफ़िज़ा मज़बूत बना दे तू मद्रसे में दिल मेरा अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) लगा दे अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) यहां के मुझे आदाब सिखा दे अवक़ात का भी मुझ को तू पाबन्द बना दे आदत तू मेरी शोर मचाने की मिटा दे सन्जीदा बना दे मुझे सन्जीदा बना दे मां बाप की इज़ज़त की भी तौफ़ीक़ खुदा (عَزَّوَجَلَّ) दे आका (عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ السَّلَام) का मदीना मेरे सीने को बना दे बस शौक़ हमें ना 'तो तिलावत का खुदा (عَزَّوَجَلَّ) दे अल्लाह (عَزَّO\_JEL) इबादत में मेरे दिल को लगा दे और ज़िक़्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे या रब (عَزَّO\_JEL) मुझे सुन्नत का मुबल्लिग़ भी बना दे हर एक मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे चुप रहने का अल्लाह (عَزَّO\_JEL) सलीक़ा तू सिखा दे महबूब (عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ السَّلَام) का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे यूँ हज़ को चलें और मदीना भी दिखा दे

(امین و بجاو النبی الامین صلی الله تعالی علیه و آله وسلم)

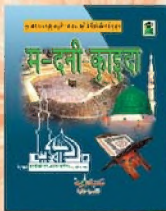


# मखारिजे हुरुफ़ का नक्शा





म-दनी मुन्नों के लिये बुन्यादी इस्लामी मा'लूमात पर मुश्तमिल मुन्फरिद किताब



# म-दनी निसाब बराए म-दनी काइदा



مکتبۃ الدینہ **मक-त-वतुल मसीना**  
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net



## सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُرَوِّعُ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इप्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निव्वतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिकाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निव्वते सवाब सुन्नतों की तरबिव्वत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ مُرَوِّعُ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुदने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ مُرَوِّعُ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ مُرَوِّعُ

## मक-त-सतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाह् दौरेन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुडोल कोम्प्लेक्ष, A.J. मुडोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

**मक-त-सतुल मदीना®**

दा'वते इस्लामी



सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net